मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 9	शुक्रवार 10 दिसम्बर 1982	संख्या 8

प्रार्थना

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
अलख अगम और अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधस्वामी।

परम सन्त का रूप धरा, जीवों पर उपकार किया।
सीधा सच्चा मार्ग दिया, आये धुर पद धामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
बन कर आये परम फ़कीर, हरने सब जीवों की पीर।
परम दयालु दानी वीर, नाम दान के दानी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।
राम भी हो और कृष्ण भी तुम।
तुम महावीर और बुद्ध गौतम।
अक्षर ब्रह्म और पुरुषोत्तम, सब नामों में अनामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

मानवता का किया प्रचार, निज अनुभव का दे दिया सार।
ऐसे गुरु को बारम्बार, नमामि नमामि नमामि।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

दाता दयाल के प्यारे तुम, मानव के रखवारे तुम।
निर्गुण और सगुण भी तुम, सब के अन्तर्यामी।
राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी।

सत्संग परम सन्त परम दयाल जी महाराज, सिकन्दराबाद (सायम्)

दिनांक 19-2-75

'रचना का भेद'

अपने अनुभव के आधार पर बताता हूँ कि सत्तगुरु किसे कहते हैं। सत्तगुरु वह है जिसमें वह सिफ़्ते हों जो इस शब्द में लिखी हुई हैं। वह कौन होता है? वह परमतत्त्व आधार है। परमतत्त्व आधार क्या है? परमतत्त्व का अर्थ है Supermost Element। वह जब इन्सानी चोले में आता है तो वह क्या तालीम देता है? जीवों को यह बताता है कि तुम वही हो, "तत्तवमसि" अर्थात् तुम वही परमतत्त्व आधार की अंश हो, परन्तु यहाँ आकर तुम अपने आप को भूल गये। शरीरधारी होने के कारण अपनी असलीयत को भूल कर अपने आप को शरीर समझने लग गये। फिर जिस्म के साथ तुम्हारे रिश्ते हो गये, मां, बाप, भाई, चाचा,

नाशों यह सब हो गये। फिर अगर वह तुम से छूटा तो तुमने अपने मन से ख़याली कलाबाजियाँ कर लीं।

मैं इस संसार में पैदा हुआ, दिल के अन्दर कोई [illegible] मुझे पता नहीं था, जो मैं चाहता था, उसको मैं राम समझता था, अथवा कृष्ण समझता था, ब्रह्म समझता था, पारब्रह्म कहता था यद्यपि मुझे ब्रह्म या पारब्रह्म के अर्थ नहीं आते थे परन्तु मैं मानता था। उस तलाश के सिलसिले में चौबीस घण्टे रोने के बाद मैं दाता दयाल के चरणों में गया था जैसा कि मैं कहता रहता हूँ। वहाँ, उन्होंने यह सन्तमत मुझको दिया और मुझे लिखा कि कबीरपन्थ, नानकमत, राधास्वामीमत की शिक्षा को पकड़ो। जब इनकी बाणियाँ पढ़ीं जिसका नमूना आज आपको कबीर साहिब के एक शब्द से सुनाता हूँ कि वह क्या कहते हैं :—

साधो कर्त्ता कर्म तें न्यारा।
आवै न जावै मरे नहिं जीवे, ता को कर बिचारा॥
राम को पिता जो दसरथ कहिये, दसरथ कौने जाया।
दसरथ पिता राम को दादा, कहो कहां तें आया॥
राधा रुकमिन किसन को रानी, किसन दोऊ को मीरा।
सोलह सहस गोपी उन भोगी, वह भयो काम को कीरा॥

वासुदेव पितु मात देवकी नन्द महर घरि आयो।
ता को करता कैसे कहिये, (जो) करमन हाथ विकायो ॥

अब आप सोचो, एक हिन्दू ब्राह्मण को जब यह वाणी सुनाई गई तो उसके दिल को कितनी ठेस लगी होगी। इसी वाणी के आधार पर मैं सन्तमत के अनुयायिओं को पूछना चाहता हूँ और कहना चाहता हूँ कि तुम जो महर्षि जी को, फ़कीर चन्द को, बाबा सावन सिंह जी को या अपने-2 गुरुओं को भगवान् समझ कर या मालिक का अवतार समझ के पूजते हो, वह नुक्स तो तुम में भी है। बाबा सावन सिंह जी भी पैदा हुए, महर्षि जी भी पैदा हुए, मैं भी पैदा हुआ और मैंने भी मर जाना है। यदि कबीर साहिब के कहने के अनुसार राम और कृष्ण की पूजा से आप कर्त्ता को हासिल नहीं कर सकते तो फ़कीर चन्द की पूजा, बाबा सावन सिंह, चरण सिंह की पूजा, निरंकारी गुरु की पूजा, हंसा की पूजा या किसी भी गुरु की पूजा, यह भी तो उसी नियम के अन्तर्गत आती हैं। सब गुरु भी तो पैदा हुए! ठीक है कि ग़लत है? तो जब मैंने ये बातें सुनीं तो दिल में ठोकर लगी परन्तु चूँकि मेरा विश्वास दाता दयाल

पर अटल था वह तो टूट न सका और उन्होंने जो सन्तमत मुझे दिया मैं इसको ग़लत भी कह नहीं सकता था इसलिए मैंने ज़िन्दगी में Research(खोज) की कि वह कर्त्ता कौन है जिसको सन्त बताते हैं कि न वह जन्मता है न मरता है। क्या मैं ऐसा सोचने के लिए मजबूर नहीं हूँ क्योंकि मैं बचपन से राम को मिलना चाहता था, यद्यपि राम का पता नहीं था परन्तु एक खबत था। सन्तमत में आया इन्होंने कहा वह राम और है भई :—

एक राम दशरथ का बेटा, एक घट-घट में लेटा।
एक राम का सकल पसारा, एक राम रहे सब से न्यारा।

उसकी तलाश में मैंने उमर खो दी। उस राम का पता दाता दयाल की दया से ऐ सत्संगियो! मुझे गुरु मानने वालो और मेरा ध्यान करने वालो! तुम्हारे चरण कमलों के कारण मुझे पता लगा कि वह कर्त्ता कौन है जो कर्म से न्यारा है। वह कौन सी चीज़ है जो कर्म से न्यारी है? इसका पता नहीं लगता था। उमर खो के अब उस आदकर्त्ता का अनुभव कर सका हूँ यद्यपि अभी तक उस आदकर्ता

की अवस्था में मैं ठहर नहीं सकता। कौन आदकर्त्ता? जो न जन्मता है न मरता है।

जो इस सृष्टि को रचने वाली ताक़त है उसका सन्त काल कहते हैं। अगर मैं आप लोगों को समझाना चाहूँ तो मेरे पास कोई शब्द नहीं मिलते। हां! एक तरीका समझाने का जानता हूँ वह भी पढ़े-लिखे आदमियों के लिए। बिजली को तुम में से बहुत से लोग जानते होंगे, बिजली में तीन चीज़ें हैं एक इलैक्ट्रिक मोटर फोर्स (E.M.F.) जो वोल्टेज से मापा जाता है और एक है करण्ट जो एम्पीयर से गिना जाता है और एक है रैजिस्टैन्स। यही हैं न तीन चीज़ें? बैटरी में जो E.M.F. है वह तो हमेशा दायम और क़ायम रहती है, उस E.M.F. में से करण्ट निकलती है जो बल्व जलाती है, पंखा चलाती है। वह उसका अपना सर्कट होता है। मैं टैलीग्राफ इन्स्पैक्टर और चीफ़ इन्स्पैक्टर भी रहा हूँ, एक ही बैटरी से हम दस-दस सर्कट बना लेते थे, सर्कट्स् इन पैरेलल। परन्तु वह जो E.M.F. है वह अपनी जगह क़ायम रहती है। इसी तरह से यह जितना संसार है सब

Energy (चेतनता) है। जो कुछ भी मेरे अन्तर बोलता है, मेरे जिस्म में काम करता है, मेरे मन में सोचता है, मेरे अन्तर प्रकाश है, वह है क्या? वह एक किस्म की चेतनता है तो जब तक कोई शख्स अपनी करण्ट के सर्कट को पूरा नहीं करता, सर्कट जो है बिजली का जब पूरा होता है जब वह *Positive* से निकलके, सर्कट में काम करके फिर मुड़के वापिस बैटरी में जाती है। इसी तरह से यह तमाम ब्रह्मण्ड सूर्य, चांद, सितारे हम सब जो कुछ भी हैं, विशेष कर इन्सान जो है उसने अपने घर जाना है अर्थात् जहाँ से जिस *E.M.F.* से हमारी सुरत आई है हमने वहाँ जाना है, कोई हमको रोक नहीं सकता परन्तु जब तक उसके रास्ते में *Resistance* (रुकावट) है (करण्ट आ रही है ना! आगे *Resistance* खड़ी कर दो, करण्ट आगे नहीं जायेगी) वह जो *Resistance* हमारे आगे आती है वह क्या है? हमारी वासनाएँ हैं, हमारी इच्छाएँ हैं, हमारी तमन्नाएँ और हमारी सांसारिक इच्छाएँ हैं और हमारा अज्ञान है। इस मंज़िल तक अर्थात् अपने घर को केवल वह जा सकता है जिसे सांसारिक इच्छा नही है क्योंकि ये

इच्छाएँ जो हैं ये *Resistance* बन जाती हैं, करण्ट को वापिस आने के लिए रूकावट डालती हैं।

आज बैठा हुआ था, हैरान था स्वयं, परन्तु आपको क्या कहूँ! मैं भी तो उससे रहित नहीं। लोग आते हैं मेरे पर दया कर दो बाबा जी! पैसा चाहिए, लड़की की शादी नहीं हुई महाराज,पोता नहीं पैदा हुआ, यह नहीं हुआ, वह नहीं हुआ, मैं अपने दिल में हँसता था कि तू दुनिया को क्या कहना चाहता है और दुनिया तुमसे क्या चाहती है? मैं अपनी आत्मा से सोचता था तू किसलिए उठा है और दुनिया क्या चाहती है तुमसे? तो अगर कोई शख्स उस कर्त्ता तक जाना चाहता है तो वह कब जायेगा? जब जो उसकी करण्ट है, करण्ट कौन है? करण्ट है तुम्हारी आत्मा, जो चित्त और मन हरक़त करता है। जब तक तुम्हारी आत्मा में साँसारिक इच्छाएँ और वासनाएँ मौजूद हैं तुम लाख बाबा फ़कीर के चरण धो-धो कर पीओ, लाख मन्दिर में मत्था टेको, लाख जप करो, लाख तप करो, सन्ध्या करो, राधास्वामीमत की वाणियाँ पढ़ो तुम अपने घर नहीं जा सकते। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा है! हम लोग गुरुओं के पास

जाते हैं कि हमारा आवागमन, जन्मना-मरना समाप्त हो जाये परन्तु हम चाहते क्या हैं ? मेरे लड़का हो जाये, मेरे दोहता हो जाये, पोता हो जाये तो ऐसे आदमी जो गुरुओं के पास जाकर यह भी चाहते हैं और साथ ही मुक्ति चाहते हैं वे मसखरे हैं । वे मसखरे हैं मसखरे !! कोई समझ नहीं, कोई बूझ नहीं ! क्या कहा मैंने आपको ! सोच लो !!

मैं हैरान हूँ मैं कहना क्या चाहता हूँ और दुनिया मेरी बात को सुनने को कहाँ तैयार है । मगर मैं इस वास्ते कहता हूँ कि इस समय मुल्क के अन्दर उस मालिक के नाम पर हमारी इन्सानी नसल बंट गई हुई है । ये जितने मजहब वाले हैं चाहे सनातनी, चाहे समाजी, चाहे जैनी, चाहे बौद्ध, चाहे ईसाई ये किसको पूजते हैं ? वे अपने ही मन से जो उनका ख्याल निकलता है, अपने मन के बनाये हुए माबूद को पूजते हैं । पूजा किसकी करते हैं वे ? दरअसल अपने मन को ही पूजा करते हैं ना ! तुम बाबे फकीर को अपने अन्तर में बनाकर उससे प्रेम करते हो तो मैं तो होता नहीं तुम्हारे अन्तर तो जो कुछ तुम अपने

अन्तर मूर्ति से प्यार करते हो, किससे करते हो ? अपने मन से करते हो ना ! तो मन ही काल का रूप है, इसलिए तुम काल के पुजारी हो। समझ गये आनन्दभाव ! कृष्ण की मूर्ति बनाके तुम उसको पूजते हो तुम अपने मन को पूजते हो, बाबा फकीर का अपने अन्दर मूर्ति बनाकर पूजते हो तुम अपने मन को ही पूजते हो, राम को मूर्ति बनाकर पूजते हो तुम अपने मन को पूजते हो। कोई अपने मन से कहता है मैं ब्रह्म हूँ, वह भी अपने मन की पूजा आप करता है, ईसामसीह वाले यसूमसीह को पूजते हैं वे भी अपने मन को पूजते हैं। तो चूँकि यह अज्ञान और भ्रम आया हुआ है, यही कालमत है, मनमत है, सब मन के पुजारी हैं, उसका नतीजा यह निकला हुआ है कि मानव जाति मज़हबी नुक्ता निगाह से बँट गई हुई है। किसी ने मन्दिर की ईंटें उखाड़ दीं, शिवजी की मूर्ति तोड़ दी, फ़साद हो गया, खून हो गये। हज़रत मुहम्मद को मूँछ का एक बाल कश्मीर में गुम हो गया या किसी ने गिरजाघर को नुकसान पहुँचा दिया, तुम देखो क्या कुछ नहीं हो गया। इस दशा को देखकर मैं अनामीधाम से अर्थात् परमतत्त्व

के रूप से निकल कर इस फकीर के चोले में आया हूँ। क्या कहने के लिए ? कि ऐ नादान इन्सान ! तू असलीयत और हकीकत से अपरिचित है। असली खुदा, असली चेतनता (*energy*) का भण्डार जहाँ से यह तमाम दुनिया प्रकट होती है वह यहाँ नहीं है इस दुनिया में खुदा या वह मालिक नहीं रहता, मालिक को अंश रहती है, जिस तरह सूर्य आसमान पर है, यहाँ सूर्य को किरणें रहती हैं सूर्य नहीं रहता यदि सूर्य यहाँ आ जाये तो हम जल कर राख हो जायेंगे। सोचो मेरी बात को मैंने क्या कहा ! इसी तरह से वह मालिक यहाँ नहीं रहता, उसकी अंश है। कौन ? तुम, मैं, तुम, तुम, तुम, तुम, सुरत रूप उसकी अंश है, वह इस मन के चक्कर में आ गई, उस कर्त्ता पुरुष के जो सृष्टि को रचता है। कौन रचता है ? करण्ट रचती है। करण्ट का अर्थ आप समझ गये ना ! वह ताकत जो दुनिया को पैदा करती है, उसके चक्कर में हम आये हुए हैं और यह करण्ट हमको उससे निकलने नहीं देती। क्या कहा ! सोचो मेरी बात को, मैं गलत कहता हूँ तो कहो !! मालिक यहाँ नहीं रहता, उसकी किरण रहती है। तो अगर

कोई शख़्स मालिक की पूजा करना चाहता है तो किसकी पूजा करे ? मन्दिर की ? मस्जिद की ? ग्रन्थ साहिब की ? कबीर की वाणी की ? वह मालिक तो है ऊपर, अगर मालिक की कोई पूजा करना चाहता है तो ऐ इन्सान ! तू इन्सान की क़दर कर क्योंकि हर एक इन्सान के अन्तर वह जो कूटस्थ है *E M. F.*, उसकी एक किरण करण्ट के रूप में जगह-2 फैल रही है। तो फिर इबादत परमात्मा की क्या हुई ? क्या कहना चाहता हूँ ? इन्सान, इन्सान की क़दर करे। हम क्या करते हैं ? इन्सान, इन्सान का दुश्मन है, इन्सान, इन्सान को मारता है, इन्सान, इन्सान को गाली देता है। तो असली फिर खुदा प्रस्ती या ईश्वर की भक्ति क्या हुई ? इन्सान, इन्सान से प्रेम करे, इन्सान, इन्सान की खिदमत करे; इन्सान, इन्सान की सेवा करे। जो शख़्स इन्सान की खिदमत करता है वही उस मालिक कुल का सच्चा भक्त हो सकता है, दूसरा कोई नहीं ! यह है मेरी खोज का निष्कर्ष। समझ रहे हो ? मगर तुम, हम करते क्या है ? दूसरों का दिल दुःखाते हैं, लड़ाइयें

करते हैं, झगड़े करते हैं। यह क्यों है ? क्योंकि सारा संसार कालमत में है। हम सब लोग अपने मन के पुजारी हैं, मनमत हैं, गुरुमत नहीं हैं। समझ गये मेरी बात को मैंने क्या कहा है आपको ? मैं शायद कितने और जन्म लेता यदि मुझ को यह राज़ न मिलता। इस तरह साफबयानी करने का दस्तूर नहीं था, सैन-बैन या इशारा करते थे, जिसकी समझ में आ गया, समझ में आ गया ! यह काम जो मुझको दाता दयाल ने दिया था, मैं यह समझना चाहता था कि कबीर साहिब के पास क्या हक़ था जो उन्होंने यह खण्डन किया ? वह कौन सा कर्त्ता कबीर साहिब बताते है जो न जन्मता है न मरता है :—

साधो कर्त्ता कर्म तें न्यारा।

कर्म कहते हैं हरक़त को। *E.M.F.* को जो वोल्टेज है वह अपनी जगह क़ायम है वह हरक़त नहीं करती। उसमें से सिर्फ एक करण्ट निकलती है वह हरक़त में आती है। नहीं समझ में आती है। तो अगर कोई शख़्स अपने घर जाना चाहता है तो कैसे जायेगा ? हमारे अन्तर जो हरक़त हो रही है

जब तक इसके परे नहीं जायेगा वह उस अपनी ज़ात में मिल नहीं सकता। क्या कहा आनन्दराव! कौन समझेगा मेरी बात को!! जिस्म में हरकत है, मन में संकल्प हैं। प्रकाश, नूर का काम फैलना है, फैलता है; देखो न! बत्ती जल रही है उसमें किरणें आ रही हैं कि नहीं आ रहीं। तो जब तक कोई इन तीन दर्जों से परे नहीं जाता वह अपनी असले ज़ात हो नहीं सकता इस वास्ते कहा है :—

तीन शून्य से पारा, वह है देश हमारा।
तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत्तनाम सत्तगुरु गति चीन्हा।

तो सन्तों का मार्ग क्या है? वह जीव, वह जो सुरत वहाँ से आई है, उसको सत्संग कराकर, रास्ता बताकर उसके घर का पता दे देते हैं कि तेरा घर भई! न जिस्म है; न मन है और न प्रकाश है, तू उससे परे है। यह समझ मुझको, दया दाता दयाल की आप सत्संगियों के कारण आई और मुझको अपने घर का पता लगा। अब मैं कोशिश यह करता हूँ कि अपने घर में ठहरूँ परन्तु यह जिस्म की क़ैद, यह अभी तक मेरा पीछा नहीं छोड़ती, नहीं समझ में

आती है ! रास्ता मुझ को मिल गया, केन्द्र का मुझे ठिकाना मिल गया, कोशिश करता रहता हूँ । क्यों ? अभी तक कमी पूरी नहीं होती, शायद हो जाये तो फिर मैं बोलूँ ही नहीं ! ये मेरे प्रारब्ध कर्म हैं जो मुझसे यह काम कराते हैं। यही बात कबीर साहिब ने कही है :—

दूर गवन तेरा हंसा हो, घर अगम अपार ।

ये माताएँ आई हैं इनको मैं क्या कहूँ ! ये मेरे सत्संग के लायक हैं !! कहाँ मैं बोलता हूँ और कहाँ आप लोग !!!कोई बीमार है, किसी को कोई शिकायत है, अरे भई ! जो-जो कर्म तुमने किये हुए हैं, भुगतोगे नहीं तो क्या करोगे । मुझे पिछली उमर में प्रोस्ट्रेट ग्लैण्ड्स् की शिकायत रहती है, मैं किसको कहूँ ! न छोटी उमर में शादी होती, न मैं विषय ज़्यादा भोगता, न मुझे प्रोस्ट्रेट ग्लैण्ड्स् होते, अपने ही कर्म का नतीजा है नां :—

दोष न काहू दीजिये, कर्मन की गति न्यारी ।

तो मैं यह सत्संग क्यों कराता हूँ ? क्या कहना चाहता हूँ ? ऐ मानव जाति ! तू उस ईश्वर या

भगवान् के नाम पर अपने अज्ञान से बँटी हुई है। तुम हो स्वयं आप राधास्वामी, 'तत्त्वमसि'। तुम वही हो जो गुरु है, तुम में और उस में कोई फ़र्क नहीं। कबीर में और तुम में कोई अन्तर नहीं, मुझ में और तुम में कोई फ़र्क नहीं, फ़र्क इतना यह है, मैं सुलझा हुआ हूँ तुम उलझे हुए हो! तो कबीर साहिब भी यही कहते हैं कि हमारा जो असली घर है वह यह नहीं है, हम यहाँ आते हैं कोई सौ वर्ष के लिए, कोई पचास साल के लिए। ये बूढ़ी-2 माताएँ आती हैं, कोई कहती है मेरे पोता है नहीं! अरी माई! पोता नहीं है, पोता पैदा हो गया तो तुमको क्या मिल जायेगा! अगर दोहता हो गया तो तुमको क्या मिल जायेगा। एक बाप ने बच्चे पैदा किये, यह ज़िम्मेवारी उसके ऊपर है जिसने पैदा किये। तुमने अपने बच्चे को पाल दिया, अपनी ड्यूटी पूरी कर दी, अब यह किस वास्ते फिर स्यापा पीटती हो कि मेरा पोता हो जाये, दोहता हो जाये। यही माया का जाल है, इसी माया के जाल में सब गृहस्थी पिल रहे हैं। केवल अपनी ड्यूटी पूरी करो। मैं कभी ख़्याल नहीं करता यद्यपि मेरी पोती भी है,

पोते भी हैं, कभी ख्याल नहीं किया कि इनका भविष्य क्या होगा। मैं क्यों करूँ ? जो मैंने पैदा किये मैंने उनकी जिम्मेवारी दूर कर दी, अब पोतों और नातियों के झगड़ों में पड़कर अपनी जिन्दगी को जो बर्बाद करते हैं, इसी आस में मर जाता है जीव और फिर नये-2 सिरे से योनियाँ भुगतता रहता है। आज किसी के घर पैदा हुआ, कल किसी के घर पैदा हुआ तो परसों किसी के घर पैदा हुआ, मार खाता रहता है, हाय-हाय करता रहता है :—

दूर गवन तेरा हंसा हो, घर अगम अपार।

E.M.F. जो हमारी *energy* का भण्डार है हमने वहाँ जाना है। कबीर साहिब कहते हैं भई ! वह बहुत दूर है। कहाँ है :—

नहिं वहँ काया नहिं वहँ माया, नहिं वहँ त्रिगुण पसार।
चार बरन उहवाँ हैं नाहीं, ना है कुल ब्योहार॥

तुम वहाँ से आये हो, कोई सौ साल के लिए आया, कोई पचास साल के लिए आया, अरे ! जवानों को तो छोड़ो मैं बूढ़ों को कहना चाहता हूँ, टांगें अब मौत के निकट आई हुई हैं परन्तु यह मोह

और मैया, मेरा-तेरा, पुत्र-पोते ये छूटते नहीं। सन्त दुनिया में इसलिए आते हैं कि जीव को उसके घर पहुँचा दें, उनको चेतावनी देते हैं, अरे बावले! तेरा घर यह नहीं है। मुझे लिखा करते थे दाता दयाल।—

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।

ऐसे-2 शब्द उन्होंने मुझे लिखे, परन्तु मुझे समझ नहीं आती थी। मैं अपने देश जाना चाहता था इसलिए उनको तंग किया करता था तो उन्होंने सन् 1918 में यह काम मुझे दिया था और कहा था तुझको तेरी मंजिल पर पहुँचाने वाला सत्तगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। आप लोग अब मेरे सच्चे सत्तगुरु हैं।—

शिष्य निवे गुरु को, यह जाने सब कोय,
गुरु निवे शिष्य को, विरला ही होय।

मैं संसार में वह गुरु प्रकट हुआ हूँ जो चेलों के आगे सिर निवाता हूँ क्योंकि तुम्हारी बदौलत जिस चीज़ के लिए मैंने जिन्दगी खो दो, सच बोला, यह किया वह किया, सिवाय इस एक काम अंग के मैंने कोई बुरा कर्म नहीं किया किसो को धोखा नहीं

दिया, किसी के साथ फ़रेब नहीं किया, हेराफेरी नहीं की, कुछ नहीं किया ! वह अब मिल गई। दाता ने यह काम दिया था, क्योंकि मेरे ज़िम्मे यह ड्यूटी थी इसलिए मैंने यह काम किया :—

नौ छः चौदह विद्या नाहीं, नाहिं वहँ वेद बिचार।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार।

क्यों ? क्योंकि जप, तप, तीर्थ, नियम, आचार तुम मन से करते हो किन्तु वह जो मार्ग है वह हमने सुरत से जाना है, मन से नहीं जाना। मन को छोड़ जाना है। अब तुम मन और सुरत में या आत्मा में और सुरत में फ़र्क व तमीज़ नहीं कर सकते जब तक तुम अपने अन्दर साधन न करो। मन क्या है ? जब तुम सो जाते हो, तुमको जिस्म के एहसासात (बोध-भान) नहीं रहते परन्तु तुम्हारा मन संकल्प करता है कि नहीं करता ? जब मन छोड़ जाते हो आगे प्रकाश रह जाता है। इस वास्ते :—

यह करनी का भेद है, नहिं बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे, तब पावे कुछ सार॥

राधास्वामीमत के कई आदमी सारा जीवन गुरु स्वरूप के ध्यान में ही मर जाते हैं। वह जो गुरु स्वरूप का ध्यान चाहे वह किसी भी गुरु का आता है जब तक तुम्हारे सामने वह रहेगा, तुम अपने घर नहीं जा सकते, बस! क्यों? यह ज्ञान मुझको तुम से मिला। जब तुम मेरा रूप बनाते हो और मैं तुम्हारे अन्दर प्रकट होता हूँ, मैं तो होता नहीं, तो वह जो रूप तुमने बनाया, वह किसने बनाया है? तुम्हारे मन ने बनाया है नाँ! तो ध्यान करने वाला उस अपने घर को नहीं जा सकता। आनन्दराव! क्या कह रहा हूँ। इसी वास्ते कहा है।—

ध्यानी भूले, योगी भूलें, ज्ञानी भूले।

यह स्वामी जी की वाणी है। मैं मर गया! इस वाणी को सुनके दुःखी हुआ करता था और कहा करता था, ऐ मालिक! मैं तो तेरे मिलने के लिए निकला था, कहाँ फंसा दिया तूने जो यह कहते हैं कि ध्यानी भी भूल गया, ज्ञानी भी भूल गया, उपासक भी भूल गया। मेरा दिमाग़ चक्कर खाया करता था, इन वाणियों ने मुझको खराब किया हुआ

था। मैं देखना चाहता था कि कैसे ज्ञानी भूले, कैसे योगी भूले और इन सब ने चक्कर खाया अर्थात् ये भी आवागमन से न बचे, क्यों ? कि जो तुम ध्यान करते हो किसी का, वह ध्यान तो तुम्हारा मन करता है। तुम योग लगाते हो, अपनी वृत्ति को किसी चीज़ के साथ जोड़ते हो, योग का अर्थ जोड़ना है ना। वह तुम्हारा मन जुड़ता है। क्या कहा मैंने। सोचो !!

मैं जान रहा हूँ मैं ऊँचा बोल रहा हूँ. क्यों बोल रहा हूँ ? कि जो आदमी तुम में से वास्तव में मुझे सन्त सत्तगुरु समझ के मेरे पास आते हो, मैं तुम को सच्चा रास्ता बता जाऊँ, अमल करना या न करना यह तुम्हारा अपनी ड्यूटी है, मेरी नहीं। सत्तगुरु के अर्थ सच्चा ज्ञान के हैं, मैंने तुमको बोल दिया, वह *E.M.F* है, वोल्टेज है जिससे करण्ट की सूरत में तुम्हारा आत्मा निकला है, इसने सर्कट तो पूरा करना ही है, परन्तु इसके सामने *Resistance* है। *Resistance* है तुम्हारी दुनिया की वासना, तुम्हारे मन के ख़्यालात, इस वास्ते योग, ज्ञान, विचार, (ज्ञान का अर्थ यहाँ विचार करना है) ध्यान, मानसिक

भक्ति, ये सब *Resistance* हैं, ये हमारी सुरत को इस चंगुल से निकलने नहीं देतीं, ये रोक लेती हैं, इसलिए करण्ट आगे नहीं जाती है। जो निकलना चाहते हैं वे निकल सकते हैं और जो नहीं चाहते उनको मैं यह कहता हूँ कि तुम अपनी करण्ट को इस तरह जलाओ कि तुम्हारी वासना व ख़्वाहिश ठीक रहे व शुभ रहे ताकि जिस सर्कट में घूम-फिर रहे हो इस सर्कट में तुमको रुकावटें कम आयें। खुशी से जीओ, प्रेम से जीओ, मुहब्बत से जीओ, परोपकार करके जीओ, धर्म-कर्म से जीओ अर्थात् 'शिवसंकल्पमस्तु' अपनाओ; प्रेम के भाव रखो, विचार अच्छे रखो, मुहब्बत से बोलो, नहीं समझ में आती है! इससे क्या होगा? कि यह जो तुम्हारा इस करण्ट का सर्कट है यह खुशगवार हो जायेगा, इससे वह जो तुम्हारी सर्कट फैलेगी उसको रुकावट कम आयेगी और यदि पार जाना चाहते हो भाई! तो जैसे कबीर साहिब कहते हैं इन सबको छोड़ के केवल सुरत से सुरत का योग कमाओ। सुरत शब्द योग है! सुरत शब्द योग दो हैं। मैं बोल रहा हूँ, मैं शब्द बोल रहा हूँ। तुम्हारा ध्यान मेरे शब्द को अगर पकड़ेगा, गुनेगा,

समझेगा, विचार करेगा, एक तो यह सुरत शब्द योग है, एक तुम्हारे अन्तर सुरत शब्द योग है। तो जिसका पहले बाहरी सुरत शब्द योग ठीक नहीं है उसका तो फ़लक भी अन्दर का सुरत शब्द योग नहीं कर सकता :—

पाँच तत्त नहि उत्पत्ति भइलैं, सो परलय के पार।

देखो ! क्या कहते हैं। पाँच तत्त्व क्या हैं ? पानी, मिट्टी, हवा, आग और आकाश। ये शरीर में भी हैं, मन में भी हैं। जब तक कोई आदमी इनसे परे नहीं जायेगा वह अपने निज घर नहीं जा सकता अर्थात् करण्ट जो है, वोल्ट अपनी बैटरी में वापिस नहीं जायेगी। जाना इसने ज़रूर है, चाहे कितना ही वक़्त लग जाये :—

तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसो अवतार।
सोरह संख के आगे होई, समरथ कर दरबार।
सन्त सिंघासन आसन बैठे, जहँ सबद झनकार।

यह मैं तुमको साईन्स के द्वारा समझा रहा हूँ, बैटरी में जो वोल्टेज है वह *energy* का भण्डार है। उसमें से जितनी मर्ज़ी चाहें सर्कट इन पैरेलल बना लो, सब सर्कट काम करेंगे, मैं करता रहा हूँ।

वह एक मालिक है जो *energy* का भण्डार है। उस 'में' से एक शेष अंश निकलता है मैंपना बनके अर्थात् जो अपने आप को 'मैं' समझता है। उस "मैं" से फिर शाखाएँ निकलती हैं, वृक्ष बन जाता है, जितना मर्जी चाहे ख्याल को दौड़ाते फिरो, चक्कर लगाते फिरो, इसी में हम फँस गये हैं :—

पुरुष रूप कहा बरनौं महिमा, तिन गति अपरम्पार।

वह जो *energy* का भण्डार है आप सोचो कितना होगा ? इसलिए मालिकेकुल जो है वह यहाँ नहीं रहता, उसकी अंश हरएक इन्सान के अन्दर है। अच्छा ! अब यह सवाल है कि *energy* जो है, वह भण्डार, उसमें से जिस तरह बैटरी में से कार्बन ऐसिड निकलता रहता है ना ! तो वह बाहर में अपनी एक जगह घेर लेता है और एक ठोस चीज़ बन जाती है, इसी तरह वह जो *energy* का भण्डार है उसके अन्दर से एक माद्दा पैदा होता है, वह माद्दा बढ़ता-2, बढ़ता-2 इस विश्व की सुरत मे कहीं चाँद, कहीं सितारे, कहीं सूर्य, कहीं कुछ, कहीं कुछ यह सब इसमें आया हुआ है। तो वह जो *energy* है जब वह वहाँ से इस शरीर की तरफ़ अर्थात् वह जो माद्दा आया

हुआ है या रचना जो है उसकी तरफ आती है वह उसमें फँस जाती है, बस ! मैंने आपको समझा दिया कि यह रचना कैसे होती है। जिस तरह बैटरी के अन्दर से कार्बन ऐसिड निकल कर बाहर ठोस बन जाता है इस तरह वह जो *energy* का भण्डार सत्तलोक है, उसके अन्तर से एक किस्म का माद्दा निकलता है। जो कारण, सूक्ष्म और स्थूल प्रकृति कहलाती है वह सब जगह यह रचना करती है। वह जो सुरत अर्थात् हमारा अपना आपा है वह जब इसमें आता है इसमें फंस जाता है, कहीं वह कारण प्रकृति में फँसा हुआ है, कहीं वह सूक्ष्म प्रकृति में फँसा हुआ है, कहीं वह स्थूल प्रकृति में फँसा हुआ है। स्थूल प्रकृति में फँसे हुए हम जिस्मधारी हैं। सूक्ष्म प्रकृति में फँसे हुए देवता हैं जो ऊपर के लोकों 'भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, और सत्यम्' में रहते हैं। तो यदि कोई शख्स अपने घर जाना चाहता है तो उसके लिए तलाश करता है उसको सत्तगुरु की प्राप्ति हो जाती है, वह उसको उपदेश करता है :—

कोटि भानु की सोभा जिन्ह के, इक इक रोम उजार।

क्या यह झूठ है ? तुम दुनिया को देखो ! कितने सूर्य हैं, कितने चाँद हैं, कितने सैय्यारे हैं, तुम्हारी, हमारी हस्ती क्या है इसमें, बताओ ? है या कि नहीं है ? तो वह जो *energy* का भण्डार है वहाँ कितना *Light* होगी, अनुभव करो। जब सूर्य में इतना *Light* है तो जहाँ से यह सूर्य बने हैं उसमें कितना भण्डार होगा ? इसी वास्ते गुरु नानक साहिब ने अनुमान से कहा है :—

लख अकासां आकास, लख पतालां पाताल।
लख सूर्य उड़क उड़क, भाल सके॥

ऐसी-2 वाणी है गुरु नानक साहिब की। यह रचना जो है, अजब क़िस्म की है जिसमें हम एक छोटी सी किरण हैं और मै किसी समय अपने पर हैरान होता हूँ कि मेरा जिस्म है, इसके अन्दर कितने कीड़े हैं, अरबों हैं कि लाखों। अगर एक कीड़ा यह चाहे कि मेरे सारे जिस्म का पता लगा ले, लगा सकता है ? इसी तरह से इन्सान यदि यह चाहे कि मैं तमाम दुनिया, ब्रह्माण्ड सारे के सारे को जान सकूँ, जान सकता है ? नहीं न जान सकता ! यही कर सकता है कि वह अपने आप को वहाँ पहुचा सकता

है। दुनिया का भेद किसी को नहीं मालूम हुआ, न कबीर साहिब को, न राधास्वामी दयाल को, न दाता दयाल को, जितनी-जितनी जिसकी *Research* थी उतना उतना वह कह गया, उसकी लीला को कौन जान सकता है।—

छर अछर दोनों से न्यारा सोइ नाम हमार।

क्षर कहते हैं स्थूल प्रकृति को, अक्षर कहते हैं सूक्ष्म प्रकृति को। वह उससे परे है और वह वहाँ परे कौन जायेगा? जब तुम अपने शरीर से क्षर और अक्षर को छोड़ जाओगे तो तुम ही तो जाओगे। जो कबीर है दिवानो! तुम हो, तुम में और कबीर में कोई फ़र्क़ नहीं, तुम में और नानक साहिब में कोई फ़र्क नहीं! परन्तु क्यों तुमको फ़र्क मालूम होता है? कि तुमको गुरु ज्ञान नहीं। तुमने अपने अन्तर साधन करके समझ-बूझ नहीं पाई :—

गुरु में और पारस में यही अन्तरो जान।
पारस लौह को कंचन करे गुरु करले आप समान॥

तो गुरु करता क्या है? जीव, जो जिज्ञासु होता है उसको भेद बताता है, राज़ बताता है, हकीक़त

बताता है और उसको अपने अन्दर चढ़ाई करने का रास्ता बताता है, जब वह वहाँ पहुँच गया, वही गुरु है वही चेला है। दुनिया ने यह समझा हुआ है एक गुरु मर गया, जो गद्दी पर बैठा है वही गुरु का रूप है, यह सब बेवकूफ़ी है, यह दुनिया की चाल है इस में कुछ नहीं :—

सार सबद को लेइके आयो, मिरतू मँझार।

कबीर साहिब कहते हैं मैं सार शब्द अर्थात् राज़ को लेके इस मृत्युलोक में आया हूँ, दुनिया को बताने के लिए कि दिवानो! तुम मज़हबी दुनिया के लिए क्यों लड़ते हो? किस ख़ुदा के नाम पर तुमने आपस में रोज़ झगड़ा बनाया हुआ है, किसलिये? हिन्दु-मुसलमानों का झगड़ा था न कबीर साहिब के वक्त में। हक़ीक़त यह है कि एक भण्डार है *energy* का, मज़हबी शब्दों में जिस को चेतन का भण्डार कह लो, वह आप है, किसी ने उसका अन्त नहीं पाया, उसमें से एक किरण निकली उसने यह रचना बना दी। अनेक ब्रह्माण्ड हैं, हर एक ब्रह्माण्ड का ब्रह्मा अलहदा, विष्णु अलहदा और हर एक ब्रह्माण्ड

का शिव अलहदा-2 है। हमारे शास्त्र कहते हैं कि जब कृष्ण महाराज गऊएँ चरा रहे थे तो ब्रह्मा जी को शक हुआ कि ब्रह्म कैसे अवतार लेता है। उसने कृष्ण के सब बछड़े चुरा लिये, यह लिखा हुआ है भागवत में। ब्रह्मा का एक दिन तो हमारा एक साल, ऐसा कुछ है, तो कृष्ण जी ने और बछड़े बना लिये। दूसरे दिन वह आया तो वे बछड़े मौजूद थे फिर हैरान होके ब्रह्मा जी विष्णु महाराज के दरबार में गये तो द्वारपाल ने पूछा; सच है या झूठ हमें पता नहीं कि तू कौन है ? मैं ब्रह्मा हूँ। किस लोक का ब्रह्मा है तू ? तो यह सिद्ध करता है कि यह सृष्टि बड़ी बेअन्त है। इसका अन्त पाना केवल अनुभव में आता है, इसके बग़ैर गुजारा नहीं है। हमको चाहिए कि अपना काम बनायें और वह काम बनाना यह है :—

चार गुरु मिलि थापल हो, जग के हैं कड़िहार।
उन कर बहियाँ पकरि रहो हो, हंसा उतरौ पार।

वह चार गुरु कौन हैं, यह तो कबीर साहिब को पता होगा, मुझे नहीं पता। मैं अपना अनुभव बताता हूँ। एक हमारी उत्पत्ति, एक उस उत्पत्ति में ठहरना,

एक उस उत्पत्ति का नाश हो जाना, 'ब्रह्मा, विष्णु, महेश' अर्थात् इस दुनिया में हम आते हैं। रचना कैसे होती है? संकल्प का ज्ञान हासिल करना, एक गुरु, उस संकल्प को कैसे क़ायम रखना है, दूसरा गुरु। संकल्प तो वक्त पर नाश हो जायेगा उसमें फिर रोना-पीटना नहीं, यह तीसरा गुरु। चौथा, पारब्रह्म, प्रकाश और शब्द, यह मेरी समझ में आया है :—

जम्बू दीप के तुम सब हंसा, गहि लो सबद हमार।
दास कबीरा अब को दीहल, निर्गुन कै टकसार॥

जम्बूद्वीप, को एशिया समझ लो। कबीर साहिब अपने ज़ज़बे में आके कहते हैं, ऐ दिवानो! उस मालिक के नाम पर जो तुम हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख और ईसाई बेवकूफ बनके लड़ते हो, असलीयत यह नहीं, यह है। मालिक वह एक है जो काया, माया और प्रकाश सबसे परे है, तुम आपस में क्यों लड़ते हो? और यही काम मैं कर रहा हूँ, और यही काम दाता दयाल कर गये! उनकी किताबें पढ़ो! हज़रत अली की लाईफ उन्होंने लिखी, स्वामी दयानन्द की लाईफ उन्होंने लिखी, जैनियों, बौद्ध

और सनातन धर्म पर उन्होंने किताबें लिखीं और सन्तमत पर उन्होंने किताबें लिखीं। उन किताबों में उन्होंने क्या सिद्ध कर दिया, जिन्होंने उनका साहित्य पढ़ा है उनको मालूम होगा कि सब को *unite* करने की कोशिश की है, एक प्लेटफार्म पर आकर आखिर में सुरत शब्द योग की हिदायत की है। क्यों ठीक है या ग़लत ? तो वही दाता की है, वही मेरी है, वही कबीर की है। सन्त जो भी दुनिया में आया है यह *unity of Humanity and unity of religion* के लिए आता है और जीवों को पार ले जाने के लिए आता है, इसीलिए मैं यह काम करता हूँ। मेरा कर्म-भोग था कि मैं असलीयत ब्यान कर जाऊंगा, वह मैं कर चला। मैंने आपको बोल दिया कि जो असली मालिक है वह यहाँ नहीं है। तुम्हारे जिस्म के अन्तर एक सुरत है, सुरत का अपना स्थान और है, उससे यह मन निकला है। मन क्या चीज़ है ? प्रकाशरूपी आत्मा जब शरीर में आता है तो उसमें मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार पैदा होते हैं। कैसे ? जैसे बीज डाला हुआ है, पानी पड़ा हुआ है, सूर्य की किरणें उस पर आती हैं तो बीज फूट जाता है। तो उसमें

से पत्ता निकलता है, टहनियाँ और शाखाएँ निकलती हैं। निकलती हैं कि नहीं निकलतीं? अगर सूर्य की किरणें वहाँ न आयें तो सब्जी नहीं होगी। जहाँ वृक्षों की छाया होती है उसके नीचे तुम कोई सब्जी बीजो वह पैदा नहीं होती क्योंकि वहाँ धूप नहीं। इसलिए वह जो प्रकाशरूपी आत्मा है जब हमारे शरीर में आ जाता है तो हमारे अन्तर में मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार पैदा होते हैं, वह मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार फैलते हैं और फिर वह हमारा जीव बन जाता है।

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक 27-4-73

परमार्थ क्या है ?

परमार्थ क्या है ? जो तुम्हारे मन से ऊँचा तथा मन से परे है।

मूर्तिपूजा करते हैं, गुरु को धारण करते हैं। क्यों जाते हैं ? यह एक प्रश्न है। मुझे औरों का तो पता नहीं। मैं क्यों गया था ? हमारे अन्तर जो हमारा जीवन है यह कुछ चाहता है। क्या चाहता है इसका पूरा पता व्यक्ति को लगता नहीं। कई लोग जो बीमार हैं, मेरे पास प्रसाद के लिए आते हैं, कोई गरीब हैं इसलिए आते हैं, किसी के लड़के-लड़की की शादी नहीं होती है

इसलिए आते हैं तथा कोई परमार्थ के लिए आते हैं, प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी वस्तु की चाह है। जब तक ये चाहें उठती रहेंगी तब तक वो वस्तु नहीं मिलेगी जिसके लिए इन्सान चाहता है। वो वस्तु क्या है ? किसी को पता नहीं लेकिन यदि तुम अपने जीवन को देखो, सारा दिन तुम काम करते हो, रात को क्या चाहते हो ? नींद चाहते हो। जिसको रात को नींद नहीं आती वह बेचैन हो जाता है। नींद में क्या होता है ? जितने मन के संकल्प होते हैं, चाहे ख्यालात होते हैं यह भूल जाता है तथा वह गहरी नींद में जाकर एक परम सुख को प्राप्त करता है। तो वास्तव में हमको शान्ति कहाँ मिलती है ? जाग्रत में हम आनन्द लेते हैं, पुत्र पैदा हो गया खुशियाँ मनाते है, तरक्की हो गई खुशियाँ मनाते हैं, मित्र मिल गये खुशियाँ मनाते हैं, सब कुछ होते हुए आनन्द लेते हैं लेकिन रात को हम सोने के लिए विवश होते हैं। प्रकृति ने हमारे जीवन को शान्त करने के लिए यह जज़बा बनाया है। तो फिर जो व्यक्ति इस जीवन में अपने मन से तंग आया हुआ है, जिसका मन उसको हर

समय झिंझोड़ता रहता है, कभी कुछ सोचता है तो कभी कुछ सोचता है। जब तक वह अपनी इच्छा से अपने आप को उस गहरी नींद की अवस्था में नहीं ले जायेगा, उसको शान्ति नहीं मिलेगी। इस अवस्था का नाम है परमार्थ अर्थात् जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य कि काम करने के बाद सो जाना, तथा दुनिया को भूल जाना है।

फिर परमार्थ क्या है? शायद किसी का परमार्थ कोई और हो, दाता दयाल और ऋषियों का परमाथ और हो मैंने जो परमार्थ को समझा, परमार्थ का सबसे बड़ा उद्देश्य जो हम चाहते हैं वह क्या है? सारा दिन काम में आनन्द लेने के साथ काम करने के बाद हम इस दुनिया को तथा काम को भूल जाना और सो जाना चाहते हैं। देखो! तुम को यदि रात को नींद न आये तो कैसी बेचैनी होती है, यही बात है और तो कुछ नहीं! तो परमार्थ क्या वस्तु है? कोई हौआ है? कोई कठिन नहीं बशर्ते कि उसको समझ आ जाये। हम परमार्थ-2 चिल्लाते दौड़ते हैं, कोई गुरुओं के पास जाता है, कोई कुछ बताता है, कोई कुछ बताता है, वे सब सच्चे हैं।

हैं। मैं किसी का खण्डन नहीं करता। मैंने प्रण किया था कि अनुभव कह जाऊंगा। वह आज कहता हूँ कि परमार्थ क्या है? परम अर्थ अर्थात् हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है? जब तक जागते हैं, दुनिया में ऐसा काम करें जिससे हमको आनन्द तथा खुशी प्राप्त हो। दुनिया में काम करो ताकि तुमको काम करने में आनन्द मिल जाये, रिश्तेदार हैं उनसे प्रेम से बोलो। कई काम करते हैं ज़बर्दस्ती, वह काम नहीं है। काम सदैव खुशी व प्रेम से करना चाहिए। स्त्रियाँ घर में रहती हैं उन्हें चाहिए कि खुशी तथा प्रेम से घर में काम करें। आदमी काम करते हैं, खुशी से तथा प्रेम से करें। यह तो जाग्रत में हमारा उद्देश्य है ताकि हम दुनिया में रहते हुए खुश रहें, बेफ़िक्र रहें, तथा फिर सुख से रहें। हम प्रम व्यवहार का तो नाम नहीं लेते तथा शेष बातों पर लड़ते रहते हैं। जब तक ऐसा है तब तक गुरु तुम्हारे अन्तर नहीं आ सकता। फकीर चन्द का रूप तुम्हारे अन्तर आ जायेगा, राम का रूप भी आ जायेगा तथा अपने-अपने धर्मानुसार मुहम्मद का रूप भी आयेगा परन्तु गुरु जो असली है वह नहीं आयेगा, जब तक तुम्हारी

वासनाएं और चाह सारी समाप्त नहीं होंगी। रात को स्वाभाविक जब हम गहरी नींद में जाते हैं तो वह चाह प्राकृतिक तौर से हमारी समाप्त हो जाती है बशर्ते कि शारीरिक हालत ठीक हो। जो व्यक्ति जागते हुए इस अवस्था को जाना चाहते हैं वे क्या करें? जब वो अपने अन्तर में जायें तो अपने मन से संकल्प न उठायें मगर तुम्हारे साथ क्या होता है? जब तुम एकान्त में अभ्यास करने लगते हो, जाते तो हो अभ्यास करने या पूजा करने, मन जाता है, दूकानदार हो तो बहीयों पर, क्लर्क हो तो फाईलों पर जाता हैं, गृहस्थी हो तो बच्चों में जाता है, इस तरह चक्कर लगाता है। यदि कोई व्यक्ति इस अवस्था को प्राप्त करना चाहे तो उसकी पहली ड्यूटी यह है कि जिस समय वह अभ्यास करने लगे, उस समय वो चेतवान् होकर करे, मन को रोके। क्योंकि मन नहीं रुकता, मन बड़ा चचल है इसलिए इसको रोकने के लिए सुमिरन है। जिह्वा न हिले, मन के साथ वहाँ सुमिरन करो। सुमिरन करने से क्या होगा? जब तुम्हारी वृत्ति अर्थात् जब तुम अपने मन से भ्रूमध्य में नाम जपना शुरू करोगे तो

तुम्हारे मन में केवल इस एक इच्छा के कि मैं उस गुरु के चरणों को पकड़ूँ जो शान्त स्वरूप हैं और कोई ख़्याल अजपाजाप के समय नहीं आयेगा। यदि मानव का सुमिरन हो बन जाये तो यह सुमिरन ही तुमको उस अवस्था में ले जा सकता है, अकेला ध्यान भी यहाँ तक ले जा सकता है।

आप आये हैं मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तूने पाखण्ड का जाल बना लिया, गुरु बन जाता है, सिंहासन पर बैठ जाता है, दाढ़ी बढ़ा लेता है। तू पाखण्ड का जाल नहीं बनाता है? मैंने पाखण्ड का जाल नहीं बनाया है, मैं स्वयं इस चक्कर में रहा हूँ, ये वाणियाँ जो मैं सुना करता था इन वाणियों की समझ नहीं आती थी। मैं पागल बन कर फिरा हूँ. अब मेरी समझ में आ गया तथा यह समझ मुझे केवल आप लोगों से आई। जब तुम कहते हो कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है या तुम्हें कोई दवाई बता दी या तुम्हारा कोई काम कर दिया तथा मैं होता नहीं तो फिर गुरु कौन हुआ? वह जो फ़कीर चन्द का रूप पैदा होता है वह गुरु नहीं है

गुरु तो है परम शान्ति, जहाँ तुम सब कुछ भूल जाते हो। यह तो प्रेम है। किसके साथ प्रेम करते हो। दिवानो! तुम तो फ़कीर चन्द के साथ प्रेम करते हो। फ़कीर चन्द के साथ प्रेम करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा, फ़कीर चन्द जो कुछ कहता है उस बात को समझ कर, उस पर अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा। क्योंकि मन चचल है, ठहरता नहीं, शुरू-2 में विवश है इन्सान कि बाहरले किसी से प्रेम करे। बच्चा है, उसकी विद्या तो उसके अन्तर है मगर विद्या उसको आती नहीं अतः पुस्तक का आश्रय लेता है। बाहरी गुरु एक सहारा है। मगर सब से प्रबल गुरु सत्संग है। सत्संग से क्या मिलता है ? :—

बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई।

सत्संग से समझ तथा विवेक मिलता है तथा मानव को अपना जीवन गुज़ारने का एक रास्ता मिल जाता है तो फिर जो गुरु मैंने समझा वह क्या हुआ ?

शायद दूसरे महात्मा गुरु के कोई और अर्थ करें, मुझे नहीं पता, गुरु समझ और विवेक का नाम

है। बाहर के गुरु की संगत से समझ और विवेक लेकर असल और सच्चे गुरु, जो परम शान्ति का रूप है, अकाल पुरुष है, उसको प्राप्त करो। वह तो सदैव तुम्हारे पास है ही परन्तु चूंकि तुम्हारे ऊपर मन की चाहें पड़ी हुई हैं वे चाहें तुमको वहाँ जाने नहीं देतीं। मैं कई बार सोचता हूँ क्यों फकीर चन्द क्या तू चाह से वंचित है? न! अच्छा क्या मेरे गुरु दाता दयाल वंचित थे? न, तथा न ही और गुरु वंचित थे। यदि आशारहित होते तो धाम व डेरे क्यों बनाते। क्या आशा के बिना डेरा बनता है? मुझ में चाह न होती तो मन्दिर क्यों बनाता! आशा के बिना न मैं रह सकता हूँ, न राम रहा, न देवी-देवता, न गुरु और न कोई महात्मा रहा। ये सब दुनिया को दिखाने की बातें हैं, किताबों में लिखी हुई हैं। क्या कृष्ण महाराज या राम आशारहित थे? देखो! राम ने रावण से सीता को लिया तो उसको अग्नि में प्रवेश करके उसकी परीक्षा ली, फिर देखो, एक धोबी ने पत्नी को घर से निकाल दिया तो उसने ताना मारा कि मैं राम नहीं हूँ जो सीता को दोबारा ले आयेगा, मैंने तुम्हें नहीं रखना। वह

बात राम के कानों तक पहुँची। फिर राम ने क्या किया? उस अबला स्त्री को लक्ष्मण के साथ वन में भेज दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया? दुनिया चाहे जो कहे केवल मर्यादा पुरुषोत्तम बनने और जनता की राय को अपने पक्ष में करने के लिए। क्या राम आशारहित थे? कोई भी व्यक्ति आशारहित नहीं। इसलिए मेरे मार्ग में जब तक दुनिया है अपनी बेहतरी के लिए, अपने परिवार की बेहतरी के लिए उचित तरीक़े से चाह रखो इसके बिना गुज़ारा नहीं है। चाह छोड़ कर कहाँ जाओगे? क्रियात्मक जीवन का प्रश्न है। चाह रखो मगर इतना समझ लो कि उस चाह में जितना काम करते हो खुशी से करो मगर इस में लिप्त न हो, जब साधन में जाने लगो, उस समय सब कुछ भूल जाओ। वो भूलोगे कब? जब तुमको अपने इष्ट से प्रेम होगा, उसका सहारा होगा। वह इष्ट कौन है? वह इष्ट है सत्तगुरु। सत्तगुरु किसे कहते हैं? परम शान्ति! वही, अकाल पुरुष है, वही अनामी पुरुष है तथा वही परम तत्त्व आधार है, उसकी भक्ति करो यही दाता दयाल कहते हैं कि सब कुछ भूल जाने में शान्ति है :—

पिला दे भक्ति का ऐसा प्याला,
ममत्व मैं अपने तन का खो दूँ।
न बुधि रहे न सुधि रहे कुछ, अहंपना सारा मन का खो दूँ।
जपूँ तपूँ और भजूँ न सुमिरूँ, न योग मुक्ति के पंथ दौड़ूँ।

जब तुम गहरी नींद में चले जाते हो फिर सो जाते हो। तो जब आदमी वहाँ उस मंज़िल पर पहुँच जाता है अर्थात् परमशान्ति में तो न उसे सुमिरन की आवश्यकता है न ध्यान की, वह तो एक अवस्था है। उसके समझने के लिए आप गहरी नींद की अवस्था समझ लो। यह अवस्था सब पर आती है, कोई बाइख़्तियार हो जाता है, अपनी मर्ज़ी या *Will Power* जब चाहे खुद जा सकता है, कोई बेइख़्तियार हो के जाता है वरना यदि प्रकृति में नींद न होती तो जीवन बड़ा कठिन था। हमारा आद सब कुछ भूल जाना है। हम पहले भी वहाँ थे और फिर भी हमको वहाँ जाना है। उसको प्राप्त करने के लिए यह प्रेम-भक्ति है। भक्ति किसको? उस परमतत्त्व आधार की, परमशान्ति की इच्छा। दाता दयाल कहते हैं :—

पिला दे भक्ति का ऐसा प्याला,
ममत्व मैं अपने तन का खो दूँ।

अर्थात् जब तुम इस अवस्था में पहुँचो तो तुमको यह ख्याल न हो कि मेरा शरीर है अर्थात् शरीर की सुध को भूल जाना।

न बुधि रहे न सुधि रहे कुछ, अहंपना सारा मन का खो दूं।

एक तो शरीर को भूले, एक मन को भूले, मन के अन्दर जितनी चाहें उठती हैं वे तुमको साधन के समय न आयें।—

जपूं तपूं और भजूं न सुमिरूं न योग मुक्ति के पंथ दौड़ूं।

तुम देखो, गहरी नींद में क्या कुछ रहता है? ऐसे ही गहरी नींद को बाइख्तियार प्राप्त करना ही परमार्थ है, बस! मेरी समझ में यह आया है।—

न नाम की माला हाथ में लो,
हिये की माला का मनका खो दूं।
वह राम क्या जिसमें राग आये,
वह त्याग क्या त्याग में फँसाये।
न बंध और मुक्ति का हो खटका,
विवेक बर का और बन का खो दूं।

यह अवस्था कब आवेगी? जब तुम सब कुछ भूल जाओगे। कब भूलोगे? यदि तुम्हारा इष्ट

जहाँ तुम्हारी मंज़िल है, यदि यह फ़कीर चन्द सुपुत्र श्री मस्तराम रहा या कोई भी गुरु रहा तो तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा, बाहरी गुरु से तो तुमको सच्चा रास्ता और सच्चा ज्ञान मिल सकता है। शेष सब बातें व्यर्थ हैं :—

न दुःख की दुविधा न सुख की चिन्ता,
न चित्त की दुचिता का भय हो किंचित।
न ज्ञान और ध्यान की हो इच्छा,
विचार साधन यतन का खो दूं।

वो कब खोयेगा ? जब तुम्हारा इष्ट पूरा होगा। उस परम तत्त्व आधार; उस कुटस्थ के साथ प्रेम करते हुए जब अन्तर में चलोगे तब सब कुछ भूल सकते हो। उस अवस्था में जाके जिस तरह गहरी नींद में जाके न ज्ञान है, न ध्यान है, न गुरु है, न शिष्य है, न राम है, न रहीम है। बाइख़्तियार अपने आप को उस अवस्था में ले जाने का नाम परमार्थ है।

न द्वन्द्व निर्द्वन्द्व का हो झगड़ा,
न द्वैत अद्वैत का हो बखेड़ा।
झुका के सिर राधास्वामी पद में,
विचार तक दासपन का खो दूं।

वह राधास्वामी पद क्या है ? 'राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहचान।' वह तुम्हारा ही निज-स्वरूप है। मगर वहाँ तक प्रत्येक व्यक्ति नहीं जा सकता इसलिए सत्संग की महिमा है। तो आप आये हैं मैंने सारांश में आप को समझाने के लिए जो मेरी समझ में आया वह बता दिया, अब अमल करना, साधन करना, वहाँ ठहरना यह उसका काम है। दूसरों का विश्वास काम करता है, मेरी समझ में यह बात आई है। सब को राधास्वामी।

मासिक सन्देश

मानवधर्मस्य धातारं दातादयालस्य प्रियतमम् ।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

मेरे प्यारे सत्संगियो ! जैसे कि मैंने पिछले महीने गुरु वन्दना से पहले श्लोक का अर्थ बताया था उसी तरह आज मैं आपको उसी वन्दना के दूसरे श्लोक का मतलब बताने जा रहा हूँ । इस श्लोक का सीधा-सादा मतलब यह है ।—

"मानवताधर्म के आधार, दाता दयाल जी के सबसे प्रिय शिष्य और सन्तमत के रक्षक फ़कीरतत्व परम दयाल जी महाराज को जगद्गुरु के रूप में नमस्कार हो ।"

इस श्लोक के अर्थ से यह बात स्पष्ट है कि परम दयाल जी महाराज क्योंकि सत्य के अवतार थे, सन्तमत की रक्षा करने के लिए ही इस जगत् में आये और उन्होंने यह सच्चाई ब्यान की कि

सन्तमत कोई फ़िरका नहीं। सन्तमत बहुत पुराना है। प्राचीन काल में इसे आर्षधर्म यानि कि ऋषियों का धर्म कहा जाता था। इसी धर्म का दूसरा नाम सनातन धर्म है। सनातन का अर्थ हमेशा रहने वाला वह शाश्वत धर्म है जो अविनाशी है और हर काल में, हर युग में, ज्यों का त्यों बना रहता है। जब लोग उसकी तरफ लापरवाही करते हैं और उसे भूल जाते हैं तो परमतत्त्व उनको चिताने के लिए अवतार लेता है। परम दयाल जी महाराज का अवतार इसी मक़सद को पूरा करने के लिए हुआ। उन्होने हमारे युग की ज़रुरत के मुताबिक इस सत्त सनातन धर्म और सन्तमत को अपने गुरु दाता दयाल जी की तरह मानवता धर्म कहा।

मानवता धर्म कोई अलग फ़िरका नहीं है। इसका नारा है 'मनुष्य बनो।' मनुष्य या मानव का क्या स्वरूप है ? मानव शब्द मनुतत्त्व से निकला है। मनु का वह अर्थ शाश्वत, अविनाशी केन्द्र या सत्य है जिसे विशुद्ध आत्मा या सुरत कहा जाता है। मनुष्य इसलिए है कि उसके अन्तर परमतत्त्व का अंश वह सुरत है जिसे अकाल पुरुष भी कहा जाता है। इस सुरत में संकल्प

की शक्ति है। इसी संकल्प से मनुष्य अपने आप को शरीर, मन और बुद्धि से हटा कर उस हालत पर पहुँच सकता है जिसे जीवन्मुक्त अवस्था कहा गया है। इस अवस्था पर उसे यह ज्ञान हो जाता है कि उसका असली आपा न तो शरीर है, न मन है और न बुद्धि अथवा वह प्रकाश है जिसे कारण शरीर कहा जाता है। इसी आपे को साक्षी कहा गया है। यह सारा संसार दुःख-सुख, लाभ-हानि, यश- अपयश, जन्म-मरण के चक्कर में रहता है। इसमें हमेशा दुविधा और द्वन्द्व रहता है लेकिन मनुष्य का असली रूप, उसका असली आपा इस चक्कर से परे है।

परम दयाल जी महाराज ने मानवता धर्म के इस सत्य को अपने अनुभव के आधार पर सीधी-सादी भाषा में ब्यान किया है। जब हम इस सच्चाई को भूल जाते हैं कि हमारा असली आपा अविनाशी तत्त्व है जो शरीर, मन और बुद्धि के बदलने पर भी क़ायम और दायम रहता है तभी शारीरिक सुख और दुःख, मानसिक खुशी और ग़मी

होता है। यह सच्चाई सभी धर्मों को एक बना सकती है क्योंकि अलग-2 धर्म सिर्फ ईश्वर के अलग-2 सगुण रूप को ही असली मान कर एक दूसरे से झगड़ते हैं। परम दयाल जी महाराज ने इसी सच्चाई को ब्यान करते हुए कहा है कि मनुष्य, तू अपने आप में पूर्ण है, तेरे विचार के अन्दर बड़ी शक्ति है इसलिए तू बेशक नाम का जाप मत कर, मन्दिरों में मत जा, गुरुओं के सामने नाक को मत रगड़, अपने विचार को पवित्र कर, शिवसंकल्प के रास्ते को अपना। जब तेरा मन शुद्ध हो जायेगा उसके बाद तू सुरत शब्द योग का अधिकारी होगा। बिना मन की शुद्धि के सुमिरन, ध्यान, भजन लाभदायक होने की बजाय हानिकारक हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने सन्तमत को मानवता धर्म, सत्यता का धर्म, और सनातन धर्म कहा है। अगर इस सच्चाई को स्वीकार नहीं किया जाता तो सन्तमत भी छोटे-2 टुकड़ों में बँट जायेगा और जिस मकसद के के लिए पहुँचे हुए सन्तों ने मालिकेकुल को एक पवित्र ज़ात मानकर मानव जाति को अलग-2 धर्मों के झगड़ों से बचाने के लिए सच्चाई ब्यान की थी,

वह मक़सद पूरा नहीं हो सकता। इसलिए ऊपर दी गई वन्दना में परम दयाल जी महाराज को मानवता धर्म का आधार तथा सन्तमत का रक्षक कहा गया है। इन विचारों के साथ मैं आप सब को सद्भावना देता हूँ। सबको राधास्वामी !

आपका फ़कीरमय
मानव दयाल

सत्संग परम सन्त मानव दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 31-10-82

जब गुरु की शरन पाई, आस पूरी हो गई।
मिल गई गुरु पद से जब, माया से दूरी हो गई।।
उठ गया परदा भरम का, मर्म सारा मिल गया।
अपने आपे की कहां, सुधि हो हुजूरी हो गई।।
क्यों सतावे अब झमेला, काल का और कर्म का।
शान्त हूँ निरभ्रान्त हूँ, गुरु पद की धूरी हो गई।।
भय मिटा संकट कटा, भ्रान्ती गई शान्ति मिली।
अब नहीं ठग सकती, माया की भगोरी हो गई।।
ज्ञान का परकाश, राधास्वामी ने अब कर दिया।
भाग जागा नूरी पाकर, अब मैं नूरी हो गई।।

ओम् !

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुर्देवो महेष्वर:।
गुरु: साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नम:।।
परमतत्त्वस्य अवतारं परमपूज्यं सत्संगिनाम्।
मानवस्य परम मिष्टं फकीरं वन्दे जगद्गुरुम्।
ईशावास्य मिद सर्वं यत् किञ्चिज् जगत्याँ जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद् धनम्।।

राधास्वामी !

मेरी अपनी आत्मा के स्वरूप सत्संगी भाइयो और बहिनो ! आज के शब्द के अनुसार मैंने आपके सामने यही मंगलाचरण रखा है जो हर सत्संग के पहले होना चाहिए, वह गुरु के प्रति नमस्कार है और जो उस गुरु के लक्षण व सिफ़्तें हैं वे बताई हैं। वैसे तो गुरु सभी सिफ़्तों, सभी गुणों व नाम रूप से परे है, जितने भी बोधभान हमारे शरीर के होते हैं, जितने भी बोधभान हमारे मन में होते हैं इतना ही नहीं बल्कि जितने बोधभान आत्मा के होते हैं, प्रकाश के होते हैं, गुरु तो उन सबसे परे है क्योंकि गुरु परम-तत्त्व का नाम है और ये सब गुरु से निकलने वाली चीज़ें हैं। परन्तु जो बोधभान गुरु के इस मंगलाचरण में गाते हैं वह इसलिए गाते हैं कि हमारे मन में जब हम नमस्कार कर रहे हैं यह धारणा और यह पक्का विश्वास हो जाये कि हम अपने आप में, जो कुछ भी हमारे बोधभान हैं उन सबको भूल कर उसकी शरण में जाते हैं।

नमस्कार के बारे में मैं एक बात बताता हूँ कि अगर मैं कहूँ कि मैं सुभाष जी को नमस्कार करता हूँ, यह और बात है परन्तु जब मैं तस्मै श्री गुरवे नमः कहता हूँ, गुरु को नमस्कार करता हूँ इसका और मतलब है। संस्कृत में सात विभक्तियाँ होती हैं। जब हम कोई चीज देते हैं, या किसी से अपना सम्बन्ध रखते हैं तो व्याकरण में सात किस्म के सम्बन्ध होते हैं, जैसे राम ने रावण को मारा, यह 'को' का सम्बन्ध है। राम एक कर्ता (*Subject*) है उसने कर्म के साथ सम्बन्ध किया। परन्तु एक और सम्बन्ध होता है जो चौथी विभक्ति होती है कि राम ने गुरु को नमस्कार किया, तस्मै श्री! इसका मतलब है कि उसके लिए दिया। इसका एक खास मतलब होता है कि जब कोई चीज चौथी विभक्ति में किसी को या किसी के लिए दी जाती है उसको वापिस नहीं लिया जाता। जब किसी चीज को ऐसा दें कि फिर न लें वह फिर चौथी विभक्ति होती है। इसमें जो चीज हम देते हैं उसको हम वापिस नहीं ले सकते। वह तो हमेशा के लिए दे दी, शरणागत हो गई।

आर्यसमाजी जो नमस्कार करते हैं यह संस्कृत के व्याकरण के नियमानुसार बिलकुल ग़लत करते हैं, नमस्ते! नमस्ते केवल गुरु को किया जाता है। नमस्ते का मतलब, 'ते तुभ्यं नमः'। तुम्हारे लिए नमस्कार है। आपके लिए जो चीज़ है फिर मेरे पास वापिस नहीं आनी, वह शरणागत की अवस्था होती है। मैंने आपको नमस्कार किया, मैंने कहा, नमस्ते जी! आपने कहा, नमस्ते जी! आपने मुझे वापिस दे दिया। यह संस्कृत की व्याकरण के नियम से ग़लत बात है। इसलिए जब हम गुरु को नमस्कार कर रहे हैं, तस्मै श्री गुरवे नमः, हमने सब कुछ 'सर्वस्व' जो कुछ है दे दिया, उसमें कुछ वापिस लेने की कोई ज़रूरत व इच्छा नहीं है। अगर हमारी देवी-देवताओं से या गुरु से कुछ लेने की इच्छा है, आकर कहते हैं हमको यह मिल जाय, वह मिल जाय तब गुरु को नमस्कार नहीं करो। नमस्कार का मतलब पूरी तरह से आत्मसमर्पण, पूरी तरह से शरणागत हो जाना है और जब आप कुछ नहीं मांगते तो मालिक आपको सब कुछ देता है, शरण का मतलब यह है।

और श्री का भी अर्थ है। आजकल तो लिख देते हैं श्री हरबंस लाल, पद्म श्री भले ही लगा दो, पद्म भूषण लगा लो अगर चाहते हो परन्तु श्री शब्द संस्कृत में सबके साथ नहीं लगाते। श्री का शब्द तो केवल उस परम तत्व आधार के अवतार के साथ लगाया जा सकता है जिसे हम भगवान् कहते हैं। भगवान् क्या है ? भगवान् वह व्यक्तित्व है, वह सत्य है जिसके अन्दर छः गुण रहते हैं। कौन-कौन से गुण ? ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, धर्म, यश और श्री। वैसे तो छः गुण सबके अन्दर हैं, आपके अन्दर भी हैं लेकिन आपके अन्दर वह निरखारे नहीं गये। जो परमतत्त्व का अवतार आता है वह शुरू से इन छः गुणों को निखारता हुआ चला जाता है। महाराज जी को मैं नमस्कार करता हूं और परमतत्त्व का अवतार कहता हूँ। क्यों कहता हूं ? ये छः गुण क्या हैं, सातवां तो है ही सत्त। यह आपके अन्दर, आपके शरीर में, आपके मन में ये जो षट्चक्र है भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, यही छः दर्जे हैं और आत्मा के अन्दर भी तीसरा तिल, सहस्र-दलकमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवरगुफा छः ही

गये और फिर सतलोक और (यही हमारे ब्रह्माण्ड के अन्दर हैं) इन छहों को जब आपने निखार लिया और व्यक्तित्व के अन्दर उसका प्रभाव आ गया तो वह भगवान् है।

अब महाराज जी को देखिये! ज्ञान, ज्ञान किस चीज़ का? ज्ञान परमतत्त्व का, ज्ञान उस आपे का जो न शरीर है, न मन है, न बुद्धि है, न आत्मा है। आत्मा सत्य थोड़े ही है। जो सत्त है उसका ज्ञान, जो ज़ात पाक है, जो क़ायम और दायम है जब उसका ज्ञान हो जाता है, तब जो नीचे के दर्जे हैं सब जो हमारे शरीर, मन और आत्मा में जो हमारे बोधभान होते हैं उनसे ऊपर उठ जाते हैं, यह है ज्ञान का मतलब। आँखों से देखना कानों से सुनना यह भी ज्ञान है और ज्ञान का मतलब यह भी होता है कि वह किताबें पढ़ लेता है, खोज करता है और नये-2 आविष्कार करता है, यह भी ज्ञान है। परन्तु ज्ञानी के सम्बन्ध में इस ज्ञान का कोई मतलब नहीं है यद्यपि यह ज्ञान भी जो विज्ञान का ज्ञान है हमारे भौतिक जीवन को बनाने के लिए इस ज्ञान की ज़रूरत है। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों ने जितने आविष्कार

किये हैं जैसे आईनस्टाईन ने एक आविष्कार किया था, जिससे उसने बड़ा ज्ञान दिया है। आईनस्टाईन ने यह भौतिक ज्ञान दिया कि यह सारे की सारी जो *energy* है, शक्ति है, उसकी व्याख्या उसने एक फार्मुला लिखकर के कर दी। उसने कहा था कि 'ई' बराबर है *energy*। कि *energy* जो है उसके तीन लक्षण हैं, एक लक्षण उसका फैलाव, दूसरा लक्षण है उसकी गति, तीसरा लक्षण है उस गति का तेज होना। साईन्स वाले जानते हैं कि उसने एक यह ज्ञान दिया। इस ज्ञान से क्या हुआ ? इस फार्मुले को लेकर के वैज्ञानिकों ने तजुर्बे किये और पता किया कि यह जो प्रकाश है (यह प्रकाश वह प्रकाश नहीं है जो अन्तर का है) यह एक लाख छब्बीस हजार मील प्रति क्षण चलता है। अब उससे क्या लाभ हुआ ? उन्होंने वायुयान बना दिये, बड़े-2 जो जम्बू जट हैं, मैंने आपको पहले बताया था 600 मील की गति से चलते हैं और अब त एक और हवाई जहाज चला है जिसका नाम कन्कार्ड है जो ध्वनि की गति से तेज जाता है। यह जो आवाज़, सुनने वाला शब्द है वह 600 मील प्रति

घण्टा जाता है परन्तु इस ध्वनि की गति से ज़्यादा तेज रफ़्तार से यह कन्कार्ड जहाज जाता है इंग्लैंड और अमेरिका के बीच चल रहा है और 1800 मील प्रति घण्टा की गति से चलता है। इसका परिणाम क्या होता है ? अगर आप लन्दन से न्यूयार्क जाओ तो मान लो यदि वह 3600 मील है तो दो घण्टे में वह पहुंच जाता है। मान लीजिए आप दोपहर का खाना खा कर चले तो दो घण्टे में जब आप अमेरिका में पहुँचते हैं और अमेरिका का टाईम पाँच घण्टे पीछे है, आप लंच के समय चले और तीन घण्टे पहले वहाँ नाश्ते के समय उसी दिन पहूँच गये, आपके नाश्ते का टाईम है और आप खाना खा के चले, विचित्र बात है न ! यह भी ज्ञान है, विज्ञान है परन्तु यह विज्ञान का ज्ञान है। विज्ञान क्या होता है ? विभिन्नज्ञानं विज्ञानम् । जो अलगाव का ज्ञान है, अलग करने वाला ज्ञान है,

[शेष क्रमशः]

R. S.
3643 West 39th Street
Cleveland Ohio 44109
U. S. A.
March 18th, 1982

My dearest Paras Ji,

Radha Swami, Param Dayal Ji Sahai, I have addressed you as Paras because Paras to me means Para Ras. Par means Param, Ras means Essence or Sat. In other words You are Param Sat. I am recalling that day in Tampa Florida when you and I were with our Param Guru Malike Kul, Pita Ji Maharaj staying at the house of Judy And Michael Lamont where Pita Ji later showed the skill of his swimming by jumping into the beautiful swimming pool. I think you remember that visit. I am writing this because only this morning Amrit and Malti Bindra called me and wanted me to convey their Radha Swami to you. All those who have met you with Pita Ji, always call me and want to know when will you visit again.

The reason I have been reminded of our Florida visit with Param Pujya Pita Ji is that I am recalling a spiritual incident. It

was that morning when you were in one room sleeping on the floor and Pita Ji was sleeping on the bed. I was in the adjoining room. I was in my meditation, when this spiritual incident occurred. Pita Ji woke, looked at you sitting on the ground by his bedside and said, "You are Faqir Chand, I am Paras Ram," He said this a number of times as you told me later on. It was really thrilling for you to hear Malike Kul identifying himself with you. When you told me about this happening, I was thrilled too. His Chashme Wahdat had gone very high. He saw his own Saguna Roop in your Saguna Roop and vice versa. This is one meaning of the immortal words of Data Dayal Ji Maharaj, when he had addressed to Param Dayal Ji saying "TERA SAGUNA ROOP HAI SANT MATE KA SAR."

Sar means essence or Ras and you are therefore Par Ras, Param Tattva in reality. How lucky you are to have been given this hint by Pita Ji himself physically ? I really feel his presence when I am in my mental existence. His presence makes my

hair stand erect, as if Pita Ji is touching me. His picture begins to move eyes and become alive. It communicates thoughts to me and I bagin to write. But When I am in deep Samadhi. I rise above the mind and sometimes above light in complete merger with incomparable bliss, unspeakable joy, mere existence. There is no contradiction in this. When my Surat is at the mental level, Pita Ji's Saguna roop communicates with me. When I am at causal level. his Causal Roop, that is, light communicates with me and gives me bliss, But when my Surat goes higher, then an unspeakable experience predominates my being. I was going to write letter to you, but it has become a Satsang. May be others, will share it. Since you have been with Pita Ji as Pathi, I would request you to accompany me at least at some Satsangs outside Hoshiarpur commencing soon after Baisakhi. I hope you can spare time. If you are busy, let me know. I will also like to have higher type of Satsangs with persons like Yourself, Dr. Jaura, Master Mohan Lal Ji, Bhagat Ji, and other Trustees who have

been lucky to have been given duties as the way to the spiritual development. I want to share my experiences with all of you and know your experiences. In these inner Satsangs, I would also like Shri S.N. Bhardwaj and Shri S. N. Vyas as well as Yogini Mata Ji also to participate. However, you may suggest some other names.

I hope that you have prepared the horoscope of Shanda Da al. Please do write to me.

I will soon be with you on the 10th April. Please tell all the trustees, workers Adhikaris and Satsangies at the temple that every one should work heart and soul for making the Baisakhi Satsang a great success this year with great love, ferver and reverence. They should forget all mutual differences, if any and unite for this function dedicated to Pita Ji, This would be the test of every one. Those who fail to shoulder this responsibility will be exposed. We will still love them and pray for their well being. More on hearing from you and meeting you. My blessings and Radha Swami. to your family. Yours in Faqir.

(Manav Dayal.

नक़ल पत्र परम सन्त मानव दयाल जी महाराज,

3643 पश्चिम, 39 नं गली,
ल्कीवलैण्ड, ओहायो, यू. एस. ए.
मार्च 18, 1982

मेरे परम प्रिय पारस जो राधास्वामी, परम दयाल जी सहाई !

मैंने आपको इस पत्र में पारस इसलिए सम्बोधित किया है क्योंकि मेरे लिए पारस का अर्थ परा रस, परम रस है, रस का अर्थ सत् होता है । दूसरे शब्दों में आप परम सत् हैं। आज मुझे फ्लोरिडा के नगर टैम्पा का वह दिन याद आ रहा है जब आप और मैं अपने परम गुरु मालिकेकुल परम दयाल जी महाराज के साथ जूडी और माइकल लेमाण्ट के घर ठहरे हुए थे, जहाँ पर महाराज जी ने बाद में उस घर के सुन्दर तालाब में कूद कर अपनी तैराकी की कला दिखाई थी, मेरे विचार में आपको वह घटना याद होगी । मैं यह सब इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि आज प्रातःकाल ही अमृत और मालती बिन्द्रा ने मुझको टेलीफोन पर कहा कि मैं आपको

उनकी ओर से राधास्वामी लिखूँ। वे सभी लोग जो आपको पिता जी के साथ मिल चुके हैं मुझे टेलीफोन करते हैं और जानना चाहते हैं कि आप अमेरिका में कब वापिस आयेंगे।

मैं आपको फ्लोरिडा के दौरे की याद इसलिए दिला रहा हूँ कि मुझे एक रूहानी घटना का ख़्याल आ गया है, यह घटना उस प्रातःकाल को घटी थी जिस दिन आप एक कमरे में नीचे कालीन पर सो रहे थे और पिता जी पलंग पर सो रहे थे। मैं साथ वाले कमरे में था। जब यह रूहानी घटना घटी, उस वक्त मैं समाधि में जाने की कोशिश कर रहा था। पिता जी उठे, उन्होंने अपने पास ही आपको नीचे बैठे हुए देखा और कहा, "तुम फ़कीर चन्द हो, मैं परस राम हूँ।" उन्होंने यह बात कई बार दोहराई जैसा कि आपने बाद में मुझे कहा। आपके लिए वास्तव में मालिक-कुल को यह कहते हुए सुनना कि वो आप में हैं और आप उनमें हो, एक बहुत रोमांचकारी अनुभव था। जब आपने इस घटना को मुझे सुनाया था मेरे भी रोंगटे खड़े हो गये। उनकी चश्मे-वाहदत की अवस्था बहुत ऊँची चली गई थी। उन्होंने उस समय अपने सगुण रूप को आप में और आपके सगुण रूप को अपने में देखा। यह दाता

दयाल जी के उन अमर शब्दों का एक अर्थ है जो उन्होंने परम दयाल जी के प्रति कहे थे और जो इस प्रकार हैं "तेरा सगुण रूप है सन्तमते का सार"।

सार का अर्थ तत्त्व या रस होता है इसलिए आप परम रस या पर रस होने के नाते असल में परम-तत्त्व हो। आप कितने भाग्यशाली हो कि पिता जो ने शरीर में होते हुए खुद आपको यह इशारा दिया। मैं जब मानसिक स्तर पर होता हूँ तो मैं वास्तव में उनकी उपस्थिति महसूस करता हूँ उनकी ऐसी उपस्थिति से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और ऐसे लगता है कि पिता जी मुझे स्पर्श कर रहे हैं। उनके चित्र में आँखें घूमने लगती हैं और वह सजीव हो जाता है। वह चित्र मुझे प्रेरणा देता है और मैं लिखना आरम्भ कर देता हूँ। किन्तु जब मैं गहरी समाधि में चला जाता हूँ तो मैं मन से ऊपर उठ जाता हूँ और कई बार प्रकाश से ऊपर उठ कर परमतत्त्व में लीन हो जाने के कारण एक अद्वितीय और अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करता हूँ, जो केवल हस्ती मात्र होता है, मेरा यह लिखना विरोधाभास नहीं है। जब मेरी सुरत मन के स्तर पर होती है पिता जी का सगुण रूप मेरे से वार्तालाप करता है।

जब मैं कारण के स्तर पर होता हूँ तो उनका कारण रूप अर्थात् प्रकाश मेरे से सम्पर्क करके मुझे आनन्द देता है किन्तु जब मेरी सुरत ऊँचे दर्जे पर चली जाती है उस वक्त मुझ पर अनिर्वचनीय अनुभव की अवस्था छा जाती है। मैं आपको पत्र लिखने को बैठा था लेकिन यह तो एक सत्संग ही हो गया, शायद इस से दूसरे भी लाभ उठायेंगे।

क्यों कि आप पिता जी के साथ पाठी के रूप में जाते थे, मेरी यह इच्छा है कि आप कम से कम कुछ सत्संगों पर मेरे साथ खास कर बैसाखी के बाद होशियारपुर से बाहर चलें। अगर आप व्यस्त हों तो और बात है। मैं यह भी चाहूँगा कि आप जैसे लोगों, डा. जोड़ा, मास्टर मोहन लाल जी, भगत जी और दूसरे उन सौभाग्यशाली ट्रस्टियों के साथ ऊँचे स्तर का सत्संग किया जाय जिन्हें परम दयाल जी महाराज ने उनके प्रकाश के लिए अलग-अलग काम दिया है। मैं आप सब को अपने अनुभव बताना चाहता हूँ और आपके अनुभव भी जानना चाहता हूँ। इन अन्दरूनी सत्संगों में मैं श्री भारद्वाज जी, श्री एस. एन. व्यास और योगिनी माता जी को भी शामिल करना चाहूँगा। फिर भी आप

किन्हीं दूसरे लोगों के नामों का सुझाव दे सकते हैं। मुझे आशा है कि आपने शाण्डा दयाल की जन्मपत्री तैयार कर दी है, कृपया इस बारे में मुझे लिखें। मैं बहुत जल्दी ही 10 अप्रैल तक आपके पास पहुँच जाऊँगा। कृपा करके सभी ट्रस्टियों, सभी सेवादारों, सभी अधिकारियों और मन्दिर के सभी सत्संगियों को कह दें कि हर एक व्यक्ति बैसाखी के सत्संग को इस वर्ष पूर्णतया सफल बनाने के लिए बहुत ही प्रेम, उत्साह और श्रद्धा के साथ काम में जुट जायें। उन्हें चाहिए कि वे आपस के मतभेद को भूल जायँ और इस उत्सव में संगठित हो कर काम करें, क्योंकि यह पिता जी के प्रति श्रद्धांजलि होगी। यह अवसर सब के लिए एक परीक्षा का अवसर है, जो लोग इस उत्तरदायित्व को निभाने में असफल होंगे उनके ढोल का पोल खुल जायेगा। हम फिर भी उनसे प्यार करेंगे और उनकी बेहतरी के लिए प्रार्थना करेंगे। शेष आपके पत्र आने पर और आपके मिलने पर। मेरा आपके परिवार को आशीर्वाद और राधास्वामी।

आपका फ़कीरमय

मानव दयाल

वन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ।।
तेरी शरणागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास ।।
रूप ध्याऊं, नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन ।।
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरण लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरण तेरी आय ।।
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग ।।

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग

26-12-82 को होगा।

परम संत हजूर मानव दयाल डा: ईशवर चन्द्र शर्मा जी महाराज के दौरे का प्रोग्राम करीव-करीव तैयार हो चुका है, अगले जनवरी 1983 के मानव मन्दिर में प्रकाशित हो जायेगा। जिन-2 केन्द्रों ने अभी तक निमन्त्रन नहीं भेजा 20 दिसमवर तक भेज सकते हैं।

सैक्रेटरी

Regd. No. 2626574 DECEMBER 10th 1982
MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS

To

1283 Sh. A. Hnmanth Rao
H. No. 10-3-194/8 Humayun
Nagar Hydrabad A. P.
Pin—500028

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

Phone : 2022

Shiv Dev Rao Press, Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)